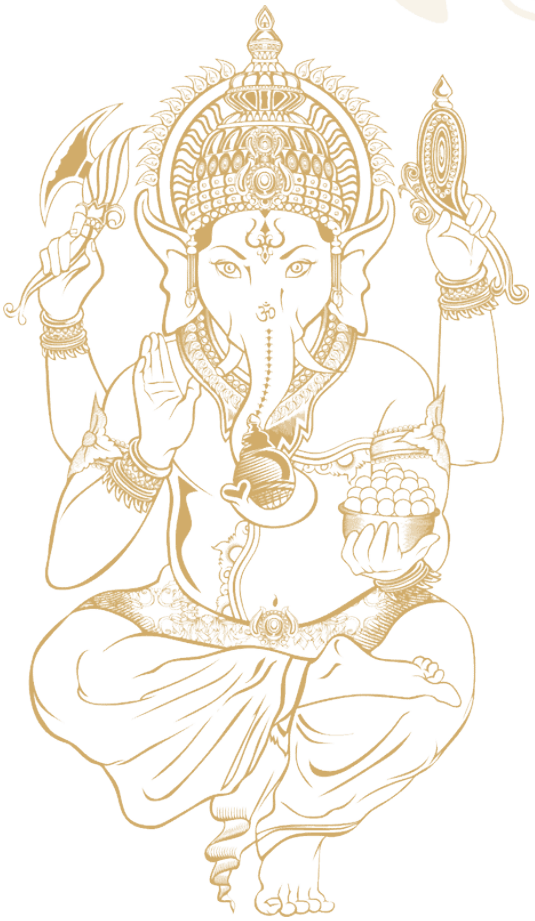

Vaibhav Gayatri

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121404805

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
12-13/06/1999	जन्म तिथि	22/12/2005
शनि-रविवार	दिन	गुरुवार
घंटे 01:45:00	जन्म समय	08:00:00 घंटे
घटी 49:59:29	जन्म समय(घटी)	02:31:55 घटी
India	देश	India
Jamner	स्थान	Jamner
20:47:00 उत्तर	अक्षांश	20:47:00 उत्तर
75:52:00 पूर्व	रेखांश	75:52:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:32	स्थानिक संस्कार	-00:26:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:45:12	सूर्योदय	06:59:13
19:07:42	सूर्यास्त	17:51:11
23:50:45	चित्रपक्षीय अयनांश	23:56:23

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
चन्द्र 6वर्ष 11मा 18दि		19:34:02	मीन	लग्न	धनु	19:50:44	शुक्र 13वर्ष 3मा 24दि	
राहु		27:34:31	वृष	सूर्य	धनु	06:23:46	चन्द्र	
01/06/2013		14:02:31	वृष	चंद्र	सिंह	17:47:22	16/04/2025	
01/06/2031		01:04:23	तुला	मंगल	मेष	15:11:30	16/04/2035	
राहु	12/02/2016	16:48:17	मिथु	बुध	वृश्चि	17:27:24	चन्द्र	14/02/2026
गुरु	07/07/2018	03:27:33	मेष	गुरु	तुला	17:41:05	मंगल	15/09/2026
शनि	13/05/2021	12:54:55	कर्क	शुक्र	मक	07:25:16	राहु	16/03/2028
बुध	01/12/2023	18:32:43	मेष	शनि व	कर्क	16:34:02	गुरु	16/07/2029
केतु	18/12/2024	20:25:03	कर्क व	राहु व	मीन	15:46:19	शनि	15/02/2031
शुक्र	19/12/2027	20:25:03	मक व	केतु व	कन्या	15:46:19	बुध	16/07/2032
सूर्य	12/11/2028	22:45:24	मक व	हर्ष	कुंभ	13:27:06	केतु	14/02/2033
चन्द्र	14/05/2030	10:10:28	मक व	नेप	मक	21:44:07	शुक्र	16/10/2034
मंगल	01/06/2031	14:56:22	वृश्चि व	प्लूटो	धनु	00:35:02	सूर्य	16/04/2035

लग्न-चलित

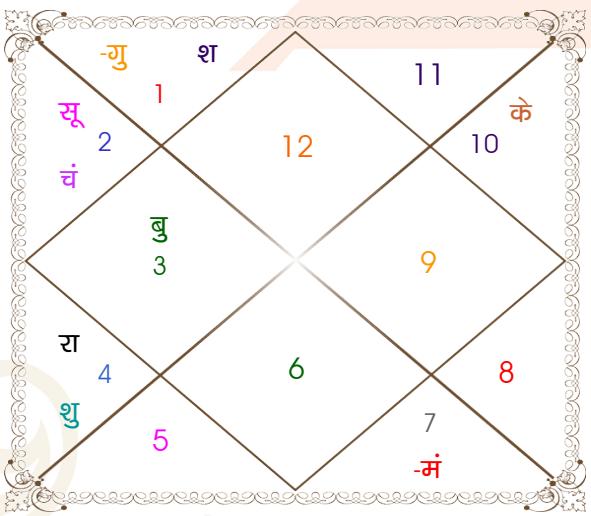

लग्न-चलित

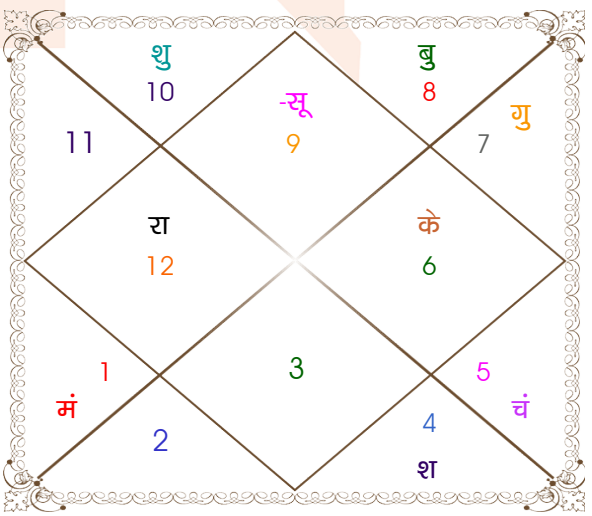

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सर्प	मूषक	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	सूर्य	5	0.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	23.50		

Vaibhav का वर्ग मृग है तथा Gayatri का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Vaibhav और Gayatri का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Vaibhav मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

Gayatri मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि Gayatri कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Vaibhav तथा Gayatri में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।